एज्रा

1 फारस के राजा कुस्त्रू के पहले साल में
याहवे ने फारस के राजा कुस्त्रू को प्रेरणा
दी, कि याहवे की बात जो यिर्मयाह के मुँह
से निकली थी, वह पूरी हो, इसलिए उसने
अपने पूरे राज्य में एलान करवाने के साथ
यह लिखवाया भी, 2 कि फारस का राजा
कुस्त्रू ऐसा कह रहा है : स्वर्ग के परमेश्वर
याहवे ने सारी दुनिया पर राज्य करने के
लिए मुझे ठहराया। उन्होंने मुझे आदेश भी
दिया है कि मैं यहूदा के यरूशलेम में एक
इमारत बनवाऊँ। 3 उनकी प्रजा के लोगों में से
तुम्हारे बीच जो कोई भी हो, परमेश्वर उसके
साथ रहें। वह यहूदा के यरूशलेम को जाकर
इस्राएल के परमेश्वर याहवे के लिए भवन
बनाएँ 4 जो कोई किसी जगह में रह गया
हो, जहाँ वह रहता हो, उस जगह के मनुष्य
चान्दी, सोना, दौलत और जानवर देकर
उसकी मदद करें और इससे अधिक परमेश्वर
के यरूशलेम के भवन के लिए अपनी-अपनी
इच्छा से भेंट चढ़ाएँ। 5 तब यहूदा और
बिन्यामीन के जितने पितरों के घरानों के
मुख्य पुरुषों और पुरोहितों और लेवियों
का मन परमेश्वर ने उभारा था कि जाकर
यरूशलेम में याहवे के भवन को बनाएँ, वे
सभी खड़े हो गए; 6 और उनके आस-पास
सभी रहने वालों ने चान्दी के बर्तन, सोना,
धन, पशु और कीमती वस्तुएँ देकर उनकी
मदद की, यह सब उन सब से अधिक था,
जो लोगों ने अपनी इच्छा से दिया था। 7 फिर
याहवे के भवन के जो बर्तन नबूकदनेस्सर
ने यरूशलेम से निकालकर अपने देवता के
भवन में रखे थे, 8 उनको कुस्त्रू राजा ने
मिथूदात खजांची से निकलवाकर, यहूदियों
के शेशबस्सर नाम प्रधान को गिनकर सौंप
दिए। 9 उनकी गिनती यह थी, अर्थात सोने
के तीस और चान्दी के एक हज़ार परात और
उन्तीस छूरी, 10 सोने के तीस और मध्यम
प्रकार के चान्दी के चार सौ दस कटोरे तथा
दूसरे प्रकार के बर्तन एक हज़ार। 11 सोने
चान्दी के बर्तन सब मिलाकर पाँच हज़ार चार
सौ थे। इन सभी को शेशबस्सर उस समय ले
आया, जब गुलाम बाबुल से यरूशलेम को
लाए गए।

2 जिन लोगों को बाबेल का राजा
नबूकदनेस्सर गुलाम बनाकर बाबेल
लाया था, उनमें से प्रान्त के जो लोग
बन्धुआई से छूटकर यरूशलेम और यहूदा
को अपने-अपने नगर में लौटे, वे ये हैं।
2 ये जरूब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, सरायाह,
रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै,
रहूम और बाना के साथ आए। इस्राएली
प्रजा के लोगों की गिनती यह है, अर्थात
3 परोश की सन्तान दो हज़ार एक सौ बहत्तर,
4 शपत्याह की सन्तान तीन सौ बहात्तर,
5 आरह की सन्तान सात सौ पछहत्तर,
6 पहत्मोआब की सन्तान येशू और योआब
की सन्तान में से दो हज़ार आठ सौ बारह,
7 एलाम की सन्तान बारह सौ चौवन, 8 जत्तू
की सन्तान नौ सौ पैंतालीस, 9 जक्कै की
सन्तान सात सौ साठ, 10 बानी की सन्तान
छः सौ बयालीस, 11 बेबै की सन्तान छः
सौ तेईस, 12 अजगाद की सन्तान बारह सौ
बाईस, 13 अदोनीकाम की सन्तान छः सौ
छियासठ, 14 बिग्वै की सन्तान दो हज़ार
छप्पन, 15 आदीन की सन्तान चार सौ
चौवन, 16 यहिजकिय्याह की सन्तान आतेर

की सन्तान में से अट्ठानवे, 17 बेसै की सन्तान
तीन सौ तेईस, 18 योरा के लोग एक सौ
बारह, 19 हाशूम के लोग दो सौ तेईस,
20 गिब्बार के लोग पंचानवे, 21 बेत-लेहम
के लोग एक सौ तेईस, 22 नतोपा के मनुष्य
छप्पन, 23 अनातोस के मनुष्य एक सौ
अट्ठाईस, 24 अज्मावेत के लोग बयालीस,
25 किर्यतारीम कपीरा और बेरोत के लोग
सात सौ तैंतालीस, 26 रामा और गेबा के
छः सौ इक्कीस, 27 मिकमास के एक सौ
बाईस, 28 बेतेल और ऐ के मनुष्य के दो
सौ तेईस, 29 नबो के बावन, 30 मग्बीस की
सन्तान एक सौ छप्पन, 31 दूसरे एलाम की
सन्तान बारा सौ चौवन, 32 हारीम की तीन
सौ बीस, 33 लोद, हादीद और ओनो के लोग
सात सौ पचीस, 34 यरीहो के लोग तीन सौ
पैंतालीस, 35 सना के तीन हज़ार छः सौ तीस,
36 फिर पुरोहित अर्थात येशू के घराने में से
यदायाह की सन्तान नौ सौ तिहत्तर, 37 इम्मेर
की सन्तान एक हज़ार बावन, 38 पशहूर की
बारह सौ सैंतालीस, 39 हारीम की सन्तान
एक हज़ार सत्रह, 40 फिर लेवीय, अर्थात
येशू और कदमिएल की सन्तान होदग्याह
की सन्तान में से चौहत्तर, 41 गवैयों में
से आसाप की सन्तान एक सौ अट्ठाईस,
42 दरबानों की सन्तान, शल्लूम की सन्तान,
आतेर की सन्तान, तल्मोन की सन्तान,
अक्कूब की सन्तान, हतीता की सन्तान,
और शोबै की सन्तान, ले सभी मिलकर
एक सौ उनतालीस होते है। 43 नतीन की
सन्तान, सीहा की सन्तान, हसूपा की
सन्तान, तब्बाओत की सन्तान। 44 केरोस
की सन्तान, सीअहा की सन्तान, पादोन
की सन्तान, 45 लबाना की सन्तान, हगबा
की सन्तान, अक्कूब की सन्तान, 46 हागाब
की सन्तान, शमलै की सन्तान, हानान की
सन्तान, 47 गिद्दल की सन्तान, गहर की
सन्तान, रायाह की सन्तान, 48 रसीन की
सन्तान, नकोदा की सन्तान, गज्जाम की
सन्तान, 49 उज्जा की सन्तान, पासेह की
सन्तान, बेसै की सन्तान, 50 असना की
सन्तान, मूनीम की सन्तान, नपीसीम की
सन्तान, 51 बकबूक की सन्तान, हकूपा की
सन्तान, हर्हूर की सन्तान, 52 बसलूत की
सन्तान, महीदा की सन्तान, हर्शा की सन्तान,
53 बर्कोस की सन्तान, सीसरा की सन्तान,
तेमह की सन्तान, 54 नसीह की सन्तान, और
हतीपा की सन्तान, 55 सुलैमान के दासों
की सन्तान, सोतै की सन्तान, हस्सोपेरेत
की सन्तान, परूदा की सन्तान, 56 याला
की सन्तान, दर्कोन की सन्तान, गिद्देल की
सन्तान, 57 शपत्याह की सन्तान, हत्तील
की सन्तान, पोकरेतसबायीम की सन्तान,
और आमी की सन्तान, 58 सब नतीन और
सुलैमान के दासों की सन्तान, तीन सौ
बानवे थे। 59 जो तेल्मेलह, तेलहर्शा, करूब,
अद्दान और इम्मेर से आए, लेकिन वे अपने
बापदादों के घराने और वंशावली न बता
पाए, कि वे इस्राएल के हैं, वे ये हैं :
60 अर्थात, दलायाह की सन्तान, तोबिय्याह
की सन्तान, और नकोदा की सन्तान, जो
मिलकर छः सौ बावन थे। 61 और पुरोहितों
को सन्तान में से हबायाह की सन्तान, हक्कोस
की सन्तान, और बर्जिल्लै की सन्तान, जिसने
गिलादी बर्जिल्लै की एक बेटी से विवाह किया
और उसी का नाम रख लिया था। 62 इन सभी
ने अपनी-अपनी वंशावली का पत्र औरों की
वंशावली की पोथियों में ढूँढा, लेकिन वे
न मिले, इसलिए उन्हें अशुद्ध करार करके
पुरोहित पद से हटाया गया। 63 अधिपति
उनसे बोला, "जब तक ऊरीम और तुम्मीम
धारण करने वाला कोई पुरोहित न हो, तब

तक कोई परम पवित्र वस्तु न खाने पाए।
64 पूरी मण्डली मिलकर बयालीस हज़ार तीन
सौ साठ की थी। 65 इनको छोड़ इनके सात
हज़ार तीन सौ सैंतीस दास-दासियाँ और दो
सौ गानेवाले तथा गानेवालियाँ थीं। 66 उनके
घोड़े सात सौ छत्तीस, खच्चर दो सौ पैंतालीस,
ऊँट चार सौ पैंतीस, 67 और गदहे छः हज़ार
सात सौ बीस थे। 68 और पितरों के घरानों
के कुछ मुख्य पुरुषों ने जब याहवे के भवन
को जो यरूशलेम में है, आए, तब परमेश्वर के
भवन को उसी की जगह पर खड़ा करने के
लिए अपनी मर्जी से कुछ दिया। 69 उन लोगों
ने अपनी हैसियत के अनुसार इकसठ हज़ार
दर्कमोन सोना और पाँच हज़ार माने चान्दी
और पुरोहितों के लायक, एक सौ अंगरखे
अपनी अपनी इच्छा से उस काम के खजाने
में दे दिए। 70 तब पुरोहित और लेवीय और
लोगों में से कुछ और गवैये और द्वारपाल
और नतीन लोग अपने नगर में और सभी
इस्राएली अपने-अपने नगर में फिर बस गए।

3 सातवें महीने में इस्राएली लोग एक मन
होकर यरूशलेम में इकट्ठा हो गए। 2 तब
योसादाक के बेटे येशू ने अपने भाई पुरोहितों
समेत और शालतीएल के बेटे जरूब्बाबेल ने
अपने भाईयों समेत कमर बान्धकर इस्राएल
के परमेश्वर की वेदी को बनाया कि उस पर
होमबलि चढ़ाएँ, जैसा मूसा की पुस्तक में
लिखा था। 3 तब उन लोगों ने वेदी को उसकी
जगह पर खड़ा किया। इसलिए कि उन्हें उस
ओर के देशों के लोगों का डर था। और
वे उस पर याहवे के लिए होमबलि अर्थात
हर दिन सुबह और शाम के होमबलि चढ़ाने
लगे। 4 उन्होंने झोपड़ियों के त्यौहार को
माना। क्योंकि लिखा है : हर दिन होमबलि
नियम के अनुसार चढ़ाएँ 5 उसके बाद हर
दिन होमबलि और नए चाँद और याहवे के
पवित्र किए हुए सभी ठहराए त्यौहारों के
बलि और अपनी अपनी इच्छा से याहवे
के लिए सभी स्वेच्छाबलि हर एक के लिए
चढ़ाएँ। 6 सातवें महीने के पहले दिन से
वे याहवे को होमबलि चढ़ाने लगे। लेकिन
याहवे के मन्दिर की नींव तब तक नहीं
डाली गई थी। 7 तब उन लोगों ने पत्थर
गढ़नेवालों और कारीगरों को रुपया, और
सीदोनी तथा सोरी लोगों को खाने की चीज़े
और तेल दिया। ऐसा इसलिए ताकि वे फारस
के राजा कुस्त्रू के खत के अनुसार देवदार
की लकड़ी लबानोन के जापा के पास से
समुद्र तक पहुँचा दें। 8 उनके परमेश्वर के
भवन में जो यरूशलेम में है, आने के दूसरे
साल के दूसरे महीने में, शालतीएल के बेटे
जरुब्बाबेल ने और योसादाक के बेटे येशू
ने और उनके और भाईयों ने जो पुरोहित
और लेवीय थे, और जितने गुलाम के रूप में
यरूशलेम आए थे, उन्होंने भी काम शुरू कर
दिया। और बीस साल या उससे अधिक उम्र
के लेवियों को याहवे के भवन की देखरेख
के लिए ठहराया। 9 तो येशू और उसके बेटे
और भाई और कदमीएल और उसके बेटे,
जो यहूदा की औलाद थे, और हेनादाद की
सन्तान और उसके बेटे परमेश्वर के भवन में
कारीगरों का काम चलाने खड़े हुए। 10 और
जब राज-मिस्रियों ने नेव डाली, तब अपनी
पोशाक पहने हुए, और हाथों में तुरही लिए
हुए पुरोहित और झांझ लिए हुए आसाप के
वंश के लेवियों को इसलिए रखा गया कि
याहवे की बड़ाई करें। उनका गीत था :
याहवे भले हैं और उनकी कृपा इस्राएल पर
सदा बनी रहती है। 11 और जब वे गाकर
याहवे की बड़ाई करने लगे और लोगों ने
नींव पडते देखा तो उन्होंने ऊंची आवाज़
से जय-जयकार किया। 12 लेकिन बहुत से

पुरोहित और लेवीय और पुरखों के घराने के
खास आदमी अर्थात वे बुजुर्ग लोग जिन्होंने
पहली इमारत को देखा था, फूट-फूटकर रोने
लगे। बहुत से लोग ऊंची आवाज़ से बड़ाई
कर रहे थे। 13 इसलिए लोग रोने और खुशी
में अन्तर न कर सके और आवाज़ बहुत दूर
तक जा रही थी।

4 जब यहूदा और बिन्यामीन के दुश्मनों
को यह मालूम पड़ा कि बन्धुआई से
छुटकारा पाए लोग इस्राएल के परमेश्वर
याहवे के लिए मन्दिर बना रहे हैं, 2 तब
वे जरुब्बाबेल और पूर्वजों के घरानों के
मुख्य-मुख्य पुरुषों के पास आकर उनसे
बोले, "हमें भी अपने साथ बनाने दो,
क्योंकि हम परमेश्वर को दिल से चाहते हैं।
असीरिया का राजा एसर्हद्दोन जो हमें यहाँ
ले आया, उसके समय से हम परमेश्वर के
लिए कुर्बानी चढाते रहे हैं।" 3 जरुब्बाबेल,
येशू और इस्राएल के पितरों के घरानों के
मुख्य पुरुषों ने उनसे कहा, "हमारे परमेश्वर
के लिए ईमारत खड़ी करने में हमें तुम
से कुछ लेना-देना नहीं। फारस के राजा
कुस्त्रू के आदेश के मुताबिक हम ही इसे
बनाएँगे। 4 तब उस देश के लोग यहूदियों
को निराश करने के लिए डराने-धमकाने
लगे और रुकावट बन गए। 5 और फारस
के राजा कुस्त्रू के जीवनभर वरन फारस के
राजा दारा के राज्य के समय तक उनके
मनोरथ को बेकार करने के लिए वकीलों
को रुपया देते रहे। 6 क्षयर्ष के राज्य के शुरू
के दिनों में उन्होंने यहूदा और यरूशलेम के
रहनेवालों का आरोपपत्र उसे लिख भेजा।
7 फिर अर्तक्षत्र के दिनों में बिशलाम, मिथदात
और ताबेल ने और उसके सहचरियों ने
फारस के राजा अर्तक्षत्र को पत्र लिखा
और पत्र अरामी भाषा में था। 8 अर्थात रहूम
राजमंत्री और शिलमशै मंत्री ने यरूशलेम
के विरूद्ध राजा अर्तक्षत्र को इस उद्देश्य से
खत लिखा। 9 उस समय रहूम राजमंत्री और
शिमशै मंत्री और उनके सहचरियों ने अर्थात
दीनी, अपर्सतकी, तर्पली, अफारसी, एरेकी,
बाबेली, शूशनी, देहवी, एलामी, 10 आदि
जातियों ने जिन्हें, महान प्रधान ओस्नप्पर ने
पार ले आकर शोमरोन नगर में और महानद
के इस पार के बाकी देश में बसाया था, एक
पत्र लिखा 11 जो पत्र उन्होंने अर्तक्षत्र राजा
को लिखा, उसकी यह नकल है - तुम्हारे
दास जो महानद के पार के लोग हैं, आदि,
आदि। 12 यह बात राजा का मालूम हो, कि
जो यहूदा आपके पास से चले आए, वे हमारे
पास यरूशलेम पहुँच गए हैं। वे उस दंगा
करने वाले घिनौने नगर को बसा रहे हैं; यहाँ
तक कि शहरपनाह बना चुके हैं, नींव को
जोड़ चुके हैं। 13 राजा को मालूम हो, कि
यदि वे सफल हो गए, तब वे लोग टॅक्स,
चुंगी और राहदारी फिर न देंगे और राजा का
नुकसान होगा। 14 हम लोग राजमन्दिर का
नमक खाते हैं और यह अच्छा नहीं कि राजा
की बेइज्जती हम देखते रहे। इसलिए हम
चिट्ठी-भेजकर सावधान कर रहे हैं। 15 तुम्हारे
पुरखाओं के इतिहास की किताब में खोज
की जाए; तब इतिहास की किताब में तुम यह
पाकर जान लोगे, कि वह नगर बलवा करने
वाला और राजाओं और प्रान्तों का नुकसान
करने वाला है। और प्राचीनकाल से उसमें
बलवा मचता आया है। इसी कारण वह
नगर बर्बाद भी किया गया था। 16 हम राजा
को बता देते हैं कि यदि वह नगर बसाया
गया, शहरपनाह बनाई गई, तो इसके कारण
महानद के इस पार तुम्हारा कोई हिस्सा न
रहेगा। 17 तब राजा ने रहूम राजमंत्री और
शिमशै मंत्री और शोमरोन और महानद के

इस पार रहने वाले उनके और सहचरियों
के पास यह जवाब भेजा, कुशल, इत्यादि।
18 जो चिट्ठी तुम लोगों ने हमारे पास भेजी,
उसे पढ़कर मुझे सुनाया गया। 19 मेरे आदेश
से छानबीन करने से मालूम पड़ा है, कि
यह नगर पुराने समय से राजाओं के विरूद्ध
बलवा करता आया है। 20 यरूशलेम के
शक्तिशाली राजा जो महानद के पार से पूरे
देश पर शासन करते थे, और कर, चुंगी और
राहदारी उनको मिलती थी। 21 इसलिए अब
यह ऐलान किया जाए कि उन लोगों को रोका
जाए और जब तक मैं आदेश न दूँ, तब तक
वह नगर न बसाया जाए। 22 इस बात में ढील
मत देना। राजाओं की हानि करने वाली बुराई
बढ़े क्यों? 23 जब राजा अर्तक्षत्र की यह चिट्ठी
रहूम और शिमशै मंत्री और उनके सहचरियों
को पढ़कर सुनाई गई, तब वे उतावली करके
यरूशलेम को यहूदियों के पास गए और उन्हें
रोका। 24 तब परमेश्वर के भवन का काम जो
यरूशलेम में है, रुक गया और फारस के
राजा दारा के राज्य के दूसरे वर्ष तक रुका
रहा।

5 तब हाग्गै नामक नबी और इद्दो का
पोता जकर्याह यहूदा और यरूशलेम
के यहूदियों से नबूवत करने लगे, उन्होंने
इस्राएल के परमेश्वर के नाम से नबूवत की।
2 तब शालतीएल का बेटा जरूब्बाबेल और
योसादाक का बेटा येशू, कमर बान्धकर
परमेश्वर के भवन को जो यरूशलेम में है,
बनाने लगे; और परमेश्वर के वे नबी उनका
साथ देते रहे। 3 उसी समय महानद के इस
पार का ततनै नाम अधिपति और शतर्बोजनै
अपने सहचारियों समेत उनके पास जाकर
यों पूछने लगे, कि इस भवन के बनाने और
शहरपनाह को खड़ा करने का आदेश तुमको
किसने दिया? 4 तब हम लोगों से यह कहा,
कि इस ईमारत के बनाने वालों के नाम क्या
हैं? 5 परन्तु यहूदियों के पुरनियों के परमेश्वर
की निगाह उन लोगों पर बन रही, इसलिए
जब तक यह बात राजा दारा को न बताई
गई और इसके बारे में चिट्ठी के द्वारा जवाब
न मिला, तब तक उन्होंने इनको न रोका।
6 जो चिट्ठी महानद के इस पार के अधिपति
अपार्सकियों ने राजा दारा के पास भेजी
उसकी नकल यह है 7 उन लोगों ने उसको
एक चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा था : राजा
दारा का हर तरह से भला हो। 8 राजा को यह
मालूम हो, कि हम लोग यहूदा नाम प्रान्त
में महान परमेश्वर के भवन के पास गए थे,
वह बड़े बड़े पत्थरों से बना रहा है और
उसकी दीवारों में कड़ियाँ जुड़ रही हैं और
यह काम जल्दी-जल्दी हो रहा है और इसमें
सफलता भी मिल रही है। 9 इसलिए हमने
उन बुजुर्गों से पूछताछ की कि भवन और
शहरपनाह बनाने का आदेश किसने दिया
था। 10 हमने उनके नामों की भी छानबीन की,
कि हम उनके मुख्य पुरुषों के नाम लिखकर
तुम को बता सके। 11 उनका उत्तर था : हम
आकाश और पृथ्वी के बनाने वाले प्रभु के
सेवक हैं। जिस भवन को बहुत साल पहले
इस्राएल के एक बड़े राजा ने बनाया था, उसी
को हम बना रहे हैं। 12 जब हमारे पूर्वजों ने
स्वर्ग के परमेश्वर को रिस दिलाई, तब उन्होंने
हमें बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के हाथ
में कर दिया था, और उसने इस भवन को
बर्बाद किया और लोगों को गुलाम बनाकर
बाबेल ले गया। 13 लेकिन बाबेल के राजा
कुस्त्रू के पहले साल में उसी कुस्त्रू राजा ने
परमेश्वर के इस भवन के बनाने की आज्ञा दी।
14 और, परमेश्वर के भवन के जो सोने-चान्दी
के बर्तन नबूकदनेस्सर यरूशलेम के मन्दिर
में से निकालकर बाबेल के मन्दिर में ले गया

था उन्हें निकलवाकर शेशबस्सर नामक एक
आदमी को जिसे उसने गर्वनर बनाया था,
सुपुर्द किया। 15 और उसने उससे कहा, ये
बर्तन ले जाकर यरूशलेम के मन्दिर में रखो
और परमेश्वर का वह भवन अपनी जगह
पर बनाया जाए। 16 तब उसी शेशबस्सर ने
आकर परमेश्वर के भवन की जो यरूशलेम
में है, नेंव डाली, तब से अब तक यह बन
रहा है, लेकिन अब तक पूरा नहीं हुआ है।
17 अब यदि आपको मंजूर हो, तो बाबेल
के राजभण्डार में इस बात की छानबीन की
जाए, कि राजा कुस्त्रू ने सचमुच परमेश्वर के
मन्दिर को जो यरूशलेम में है, बनवाने का
आदेश दिया था या नहीं। तब राजा इस बारे
में अपने विचार हम से बाँटे।

6 तब राजा दारा की आज्ञा से बाबेल के
पुस्तकालय में जहाँ खज़ाना रखा जाता
था, खोज की गई। 2 और मादी नाम प्रान्त
के अहमता नगर के राजगढ़ में एक किताब
मिली, जिसमें यह सब लिखा था : 3 कि राजा
कुस्त्रू के पहले साल में उसी कुस्त्रू राजा ने
यह आज्ञा दी, कि परमेश्वर के भवन के बारे में
जो यरूशलेम में है, अर्थात वह भवन जिस में
कुर्बानी की जाती थी, वह बनाया जाए और
उसकी नेव मज़बूती से डाली जाए। उसकी
ऊँचाई और चौड़ाई साठ-साठ हाथ की हो।
4 उसमें तीन रद्दे भारी पत्थरों के हों, और
एक परत नई लकड़ी की हो, और इनकी
लागत राजभवन में से दी जाए। 5 परमेश्वर
के भवन के जो सोने और चान्दी के बर्तन
नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मन्दिर में से
निकलवाकर बाबेल को पहुँचा दिए थे वह
लौटाकर यरूशलेम के मन्दिर में अपने-अपने
स्थान पर पहुँचाए जाएँ और तुम उन्हें परमेश्वर
के भवन में रख देना। 6 अब हे महानद के
पार के गर्वनर ततनै, हे शतर्बाजनै! तुम अपने
सहचरी महानद के पार के आपर्सकियों समेत
वहाँ से अलग रहो; 7 परमेश्वर के उस भवन के
काम को छोड़ दो, यहूदियों का गर्वनर और
यहूदियों के बुजुर्ग परमेश्वर के उस भवन को
उसी के स्थान पर बनाएँ। 8 वरन मेरा आदेश
यह है, कि तुम्हें यहूदियों के उन बुजुर्गों से
ऐसा बर्ताव करना पड़ेगा, कि परमेश्वर का
वह भवन बनाया जाए, अर्थात राजा के पैसों
में से महानद के पार के टॅक्स में से, उन
आदमियों को फुर्ती के साथ खर्चा दिया जाए,
ऐसा न हो कि उनको रुकना पड़े। 9 और
क्या बछड़े, क्या मेंढ़े, क्या मेम्ने, स्वर्ग के
परमेश्वर के होमबलियों के लिए जिस-जिस
वस्तु की उन्हें ज़रूरत हो, और जितना
गेहूँ, नमक, दाखमधु और तेल यरूशलेम के
पुरोहित कहें, वह सभी उन्हें बिना भूलचूक
हर दिन दिया जाए, 10 इसलिए कि वे स्वर्ग के
परमेश्वर की सुखदायक खुशबूवाली कुर्बानी
चढ़ाकर राजा और राजकुमारों की लम्बी उम्र
के लिए प्रार्थना करें। 11 फिर मैंने यह आज्ञा
दी, कि जो कोई इस आदेश का पालन न
करे, उसके घर में से कड़ी निकाली जाए,
और उस पर वह स्वयं चढ़ाकर जकड़ा जाए,
और उसका घर गुनाह के कारण घूरा बनाया
जाए। 12 और परमेश्वर जिसने वहाँ अपने नाम
का निवास ठहराया है, वह क्या राजा, क्या
प्रजा उन सभी को जो यह आज्ञा टालने और
परमेश्वर के मन्दिर को जो यरूशलेम में है,
बर्बाद करने के लिए हाथ बढ़ाएँ, नष्ट करे।
मुझ दारा ने इसे जल्दी निबटाने को कहा।
13 तब महानद के इस पार के अधिपति ततनै
और शतर्बोजनै और उनके सहचारियों ने दारा
राजा के चिट्ठी भेजने के कारण, उसी के
अनुसार फुर्ती से काम किया। 14 तब यहूदी
बुजुर्ग, हाग्गै नबी और इददो के पोते जकर्याह
के नबूवत करने से मन्दिर को बनाते रहे

और सफल भी हुए और इस्राएल के परमेश्वर
की आज्ञा के अनुसार और फारस के राजा
कुस्त्रू, दारा और अर्तक्षत्र की आज्ञाओं के
आधार पर बनाते-बनाते उसे पूरा कर लिया।
15 इस तरह वह भवन राजा दारा के राज्य के
छठवे साल में अदार महीने के तीसरे दिन
को बनकर पूरा हुआ। 16 इस्राएली अर्थात
पुरोहित लेवीय और जितने लोग गुलामी से
आए थे, उन्होंने परमेश्वर के उस भवन की
प्रतिष्ठा बड़ा जश्न मनाकर की। 17 उस समय
उन लोगों ने ऐक सौ बैल, दो सौ मेंढ़े और
चार सौ मेम्ने और फिर सभी इस्राएल के
लिए अपराधबलि करके इस्राएल के गोत्रों
की गिनती के अनुसार बारह बकरे चढ़ाए।
18 तब जैसे मूसा की पुस्तक में लिखा है, वैसे
ही उन्होंने परमेश्वर की आराधना के लिए
जो यरूशलेम में है, बारी-बारी से पुरोहितों
और इस दल के लेवियों को ठहराया। 19 फिर
पहले महीने के चौदहवें दिन को गुलामी से
आए हुए लोगों ने फसह माना। 20 क्योंकि
पुरोहितों और लेवियों ने एक मन होकर
अपने-अपने को शुद्ध किया था इसलिए वे
सभी शुद्ध थे। उन्होंने बन्धुआई से आए हुए
सभी लोगों और अपने भाई पुरोहितों के लिए
और अपने लिए फसह के जानवर कुर्बान
किए। 21 तब गुलामी से लौटे हुए इस्राएली
और जितने और देश की अन्य जातियों की
अशुद्धता से इसलिए अलग हो गए थे कि
इस्राएल के परमेश्वर याहवे की चाहत रखें,
उन सभी ने खाना खाया। 22 अखमीरी रोटी
का त्यौहार सात दिन तक खुशी के साथ
मनाते रहे, क्योंकि प्रभु ने उन्हें आनन्दित
किया था, और असीरिया के राजा का मन
उनकी ओर इस तरह मोड़ दिया, कि वह
परमेश्वर अर्थात इस्राएल के परमेश्वर के भवन
के काम में उनकी मदद करे।

7 इन बातों के बाद अर्थात फारस
के राजा अर्तक्षत्र के दिनों में एज्रा
बाबेल से यरूशलेम को गया। वह सरायाह
का बेटा था। अजर्याह हिल्कियाह का,
2 हिल्कियाह शल्लूम का, शहल्लूम सादोक
का, सादोक अहीतूब का, अहीतूब अमर्याह
का, 3 अमर्याह मरायोत का, 4 मरायोत
जरहयाह का, जरहयाह उज्जी का, उज्जी
बुक्की का, 5 बुक्की अबीशू का, अबीशू
पीनहास का, पीनहास एलीआज़र का और
एलीआज़र हारून का पुरोहित का बेटा था।
6 यह एज्रा, मूसा के नियमशास्त्र के बारे में
जिस इस्राएल के परमेश्वर याहवे ने दिया था,
जानकार था। उसके परमेश्वर याहवे की कृपा
जो उस पर थी, उस कारण राजा ने उसका मुँह
मांगा वर दे दिया। 7 इस्राएली और पुरोहित,
लेवीय, गवैये और द्वारपाल और नतीन के
कुछ लोग अर्तक्षत्र राजा के सातवें साल में
यरूशलेम को ले गए। 8 और वह राजा के
सातवें वर्ष के पाँचवे महीने में यरूशलेम में
गया। 9 पहले महीने के पहले दिन को वह
बाबेल से चल पड़ा। उसके परमेश्वर की कृपा
उस पर रही। इसलिए पाँचवे महीने के पहले
दिन वह यरूशलेम को पहुँचा। 10 क्योंकि
एज्रा ने याहवे के नियमशास्त्र का मतलब
जानने के लिए और उसके अनुसार करने
के लिए और इस्राएल में विधि और नियम
सिखाने के लिए अपना मन लगाया था। 11 जो
चिट्ठी राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा पुरोहित और
शास्त्री को दी थी जो याहवे की आज्ञाओं
के शब्दों का और उसकी इस्राएलियों में
चलाई हुई विधियों का जानकार था, उसकी
नकल यह है। 12 अर्थात, एज्रा पुरोहित जो
स्वर्ग के परमेश्वर की इच्छा का पूरा जानकार
है, उसको अर्तक्षत्र राजा की ओर से आदि,
आदि। 13 मैं यह आदेश देता हूँ, कि मेरे

राज्य में जितने इस्राएली और उनके पुरोहित
और लेवीय अपनी इच्छा से यरूशलेम जाना
चाहे, वे तुम्हारे साथ जाने पाएँ। 14 तुम तो
राजा और उसके सातों मंत्रियों की ओर से
इसलिए भेजा जाता है, कि अपने परमेश्वर के
नियम-आज्ञाओं के बारे में जो तुम्हारे पास
है, यहूदा और यरूशलेम की हालचाल जान
ले 15 और जो चान्दी-सोना, राजा और उसके
मंत्रियों ने इस्राएल के परमेश्वर को जिसकी
(उपस्थिति) यरूशलेम में है, अपनी इच्छा
से दिया है, 16 और जितना चान्दी सोना पूरे
बाबेल प्रान्त में तुम्हें मिलेगा, और जो कुछ
लोग और पुरोहित अपनी इच्छा से अपने
परमेश्वर के भवन के लिए जो यरूशलेम
में है देंगे, उसको ले जाए। 17 इसलिए तुम
उस रुपए से फुर्ती के साथ बैल, मेंढ़े और
मेम्ने उनके लायक अन्नबलि और अर्घ की
वस्तुओं सहित खरीदना और उसे वेदी पर
चढ़ाना, जो तुम्हारे परमेश्वर के यरूशलेम
वाले भवन में है। 18 और जो चान्दी सोना,
बच जाए, उससे जो कुछ तुम तुम्हें और
तुम्हारे भाइयों को ठीक जान पडे, वही
अपने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना।
19 और तुम्हारे परमेश्वर के भवन की उपासना
के लिए जो बर्तन तुम्हें सौंपे जाते हैं, उन्हें
यरूशलेम के परमेश्वर के सामने दे देना।
20 इससे अधिक जो कुछ तुम्हें अपने परमेश्वर
के भवन के लिए ज़रूरी जानकर देना पड़े,
वह राजखजाने में से दे देना। 21 मैं अर्तक्षत्र
राजा यह आदेश देता हूँ कि तुम महानद
के पार के सभी खजांचियों में से कुछ एज्रा
पुरोहित जो स्वर्ग के परमेंश्वर की व्यवस्था
का अच्छा जानकार है, तुम लोगों से चाहे,
वह तुरन्त किया जाए। 22 अर्थात सौ किक्कार
तक चान्दी, सौ कोर तक गेहूँ, सौ बत
तक दाखमधु, सौ बत तक तेल और नमक
जितना चाहिए, उतना दिया जाए। 23 जो जो
हुक्म स्वर्ग के परमेश्वर से मिले, ठीक वैसे
ही किया जाए। राजा और राजकुमारों के
परमेश्वर का गुस्सा क्यों भड़के। 24 फिर हम
तुम्हें सावधान कर देते हैं, कि परमेश्वर के
उस भवन के किसी पुरोहित, लेवीय, गवैये,
द्वारपाल, नतीन या किसी सेवक से कर,
चुंगी या राहदारी लेने का आदेश नहीं है।
25 फिर हे एज्रा, तुम्हारे परमेश्वर से मिली हुई
बुद्धि के अनुसार जो तुम में है, न्यायियों और
विचार करने वालों को ठहराए, जो महानद
के पार रहनेवालों में जो तुम्हारे परमेश्वर की
व्यवस्था जानते हैं, इन्साफ करें, उनको तुम
सिखाना। 26 और जो कोई तुम्हारे परमेश्वर
के नियम-आज्ञाओं और राजा के आदेशों
का पालन न करे, उसे सज़ा देने में देरी
न की जाए; चाहे मौत की सज़ा, चाहे देश
से निकाला जाना, चाहे सामान जब्त किया
जाना और चाहे हिरासत में लेना। 27 धन्य है
हमारे पितरों के परमेश्वर याहवे, जिन्होंने ऐसी
मनसा राजा के मन में पैदा की है, कि याहवे
के यरूशलेम के भवन को सुधारे; 28 और
मुझ पर राजा और उसके मंत्रियों और राजा
के सभी बड़े-बड़े गर्वनरों को दयालु किया।
मेरे परमेश्वर याहवे की कृपादृष्टि जो मुझ पर
हुई, इसके अनुसार मैंने हिम्मत बान्धा, और
इस्राएल में से खास आदमियों को इकट्ठा
किया, कि वे मेरे साथ आएँ।

8 उनके पूर्वजों के घरानों के मुख्य मुख्य
पुरुष ये हैं, और जो लोग राजा अर्तक्षत्र
के राज्य में बाबेल से मेरे संग यरूशलेम
को गए, उनकी वंशावली यह है : 2 अर्थात
पीनहास के वंश में से गेर्शोम, ईतामार के
वंश में से दानिय्येल, दाऊद के वंश में से
हत्तूस। 3 शकन्याह के वंश के परोश के गोत्र
में से जकर्याह जिसके संग डेढ़ सौ पुरुषों की

वंशावली हुई। 4 पहत्मोआब के वंश में से
जरहयाह का बेटा एल्यहोएनै, जिसके साथ
दो सौ आदमी थे। 5 शकन्याह के वंश में से
यहजीएल का बेटा, जिसके साथ तीन सौ
पुरुष थे। 6 आदीन के वंश में से योनातान
का पुत्र अबेद, जिसके संग पचास पुरुष
थे। 7 एलाम के वंश में से अतल्याह का
बेटा यशायाह, जिसके संग सत्तर पुरुष थे।
8 शपत्याह के वंश में से मीकाएल का बेटा
जबद्याह, जिसके साथ अस्सी आदमी थे।
9 योआब के वंश में से यहीएल का बेटा
ओबद्याह, जिसके साथ दो सौ अठारह पुरुष
थे। 10 सलोमति के वंश में से योसिय्याह का
बेटा, जिसके साथ एक सौ साठ आदमी थे।
11 बेबै के वंश में से बेबै का पुत्र जकर्याह,
जिसके संग अट्ठाईस पुरुष थे। 12 अजगाद के
वंश में से हक्कातान का पुत्र योहानान, जिसके
संग एक सौ दस पुरुष थे। 13 अदोनीकाम
के वंश में से जो पीछे गए उनके नाम ये हैं
: अर्थात एलीपेलेत, यीएल और समायाह,
और उनके संग साठ पुरुष थे। 14 और बिग्वै
के वंश में से ऊत्तै और जब्बूद थे, उनके साथ
सत्तर लोग थे। 15 इनको मैंने उस नदी के
पास जो अहवा की ओर बहती है, इकट्ठा
कर लिया, और वहाँ हम लोग तीन दिन
डेरे डाले रहे, और मैंने वहाँ लोगों और
पुरोहितों को देख लिया परन्तु किसी लेवीय
को न पाया। 16 मैंने एलीएज़ेर, अरीएल,
शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान,
नातान, जकर्याह और मशुल्लाम को जो मुख्य
लोग थे, और योयारीब और एलनातान को
जो बुद्धिमान थे, 17 बुलवाकर इद्दो के पास
जो कासिप्या नाम जगह का प्रधान था, भेज
दिया और उनको समझाया कि कासिप्या
जगह में इद्दो और उसके भाई नतीन लोगों
से क्या-क्या कहना, कि वे हमारे पास हमारे
परमेश्वर के भवन के लिए सेवा करने वालों
को ले आएँ। 18 और हमारे परमेश्वर की दया
जो हम पर हुई, इसके अनुसार वे हमारे
पास ईश्शेकेल के जो इस्राएल के परपोता
और लेवी के पोता महली के वंश में से था,
और शेरेब्याह को, और उसके बेटों और
भाइयों को अर्थात अठारह जनों को; 19 और
हशब्याह को और उसके साथ मरारी के वंश
में से यशायाह को और उसके बेटों और
भाइयों अर्थात बीस जनों को, 20 और नतीन
लोगों में से जिन्हें दाऊद और हाकिमों ने
लेवियों की खिदमत करने को ठहराया था
दो सौ बीस नतिनों को ले आए। इन सभों
के नाम लिखे हुए हैं। 21 तब मैंने वहाँ अर्थात
अहवा नदी के तीर पर उपवास का ऐलान
इस विचार से किया, कि हम परमेश्वर के
सामने नम्र हों और उनसे अपने बालबच्चों के
लिए और सारी दौलत के लिए आसान सफ़र
माँगे। 22 क्योंकि मैं रास्ते के दुश्मनों से बचने
के लिए सिपाहियों की टीम और सवार राजा
से माँगने के लिए शर्मिन्दगी महसूस करते
थे, क्योंकि हम राजा से कह चुके थे कि
हमारे परमेश्वर अपने सभी खोजियों पर भलाई
के लिए कृपादृष्टि रखते हैं। और जो उन्हें
छोड़ देते हैं, उनकी ताकत और गुस्सा उनके
खिलाफ़ है। 23 इसी बारे में हमने उपवास
करके परमेश्वर से प्रार्थना की और हमारी सुनी
गई। 24 तब मैंने मुख्य पुरोहितों में से बारह
आदमियों को अर्थात शेरेब्याह, हशेब्याह
और इनके दस भाइयों को अलग करके
जो चान्दी-सोना और बर्तन, 25 राजा और
उसके मंत्रियों और उसके गर्वनरों और जितने
इस्राएली मौजूद थे, उन्होंने हमारे परमेश्वर के
भवन के लिए भेंट दिए थे, उन्हें तौलकर
उनको दिया। 26 अर्थात मैंने उनके हाथ में
साढ़े छः सौ किक्कार चान्दी, सौ किक्कार

चान्दी के बर्तन। 27 सौ किक्कार सोना, हज़ार
दर्कमोन के सोने के बीस कटोरे, और सोने
की तरह कीमती चोखे चमकने वाले पीतल
के दो बर्तन तौलकर दे दिए। 28 और मैंने
उनसे कहा, "तुम प्रभु के लिए अलग किए
हुए हो, और बर्तन भी। यह चान्दी-सोना भेट
दिया जा चुका है। यह तुम्हारे बुज़ुर्गों के
लिए खुशी से दी गई थी। 29 इसलिए जागते
रहना, और जब तक तुम इन्हें यरूशलेम में
प्रधान पुरोहितों और लेवियों और इस्राएल
के बुज़ुर्गों के घरानों के प्रधानों के सामने
याहवे के भवन की कोठरियों में तौलकर
न दो, तब तक इनकी देखरेख करते रहो।
30 तब पुरोहितों और लेवियों ने चान्दी सोने
और बर्तनों को तौलकर ले लिया कि उन्हें
यरूशलेम को हमारे परमेश्वर के भवन में
पहुँचाए। 31 पहले महीने के बारहवें दिन को
हमने अहवा नदी से निकलकर यरूशलेम
का रास्ता लिया, और हमारे परमेश्वर की
दया हम पर बनी थी। प्रभु ने हमें हमारे
दुश्मनों और छिप कर हमला करने वालों
से बचाया। 32 हम यरूशलेम पहुँच ही गए
और वहाँ तीन दिन तक टिके। 33 चौथा
दिन आने पर वह चान्दी सोना और बर्तन
हमारे परमेश्वर के भवन में ऊरीयाह के बेटे
मरेमोत पुरोहित के हाथ में तौलकर दिए गए।
उसके साथ पीनहास का बेटा एलीआज़र
था। उनके साथ येशू का बेटा योजाबाद
लेवीय और बिन्तूई का बेटा नोअद्याह लेवीय
थे। 34 उन सब चीज़ों को तभी गिना गया
और तौला गया और लिखा गया। 35 जो
लोग गुलामी से आए थे, उन्होंने इस्राएल
के परमेश्वर के लिए होमबलि चढ़ाए, अर्थात
पूरी इस्राएल के लिए बारह बछड़े, छियानवे
मेंढ़े और सतहत्तर मेम्ने और अपराधबलि के
लिए बारह बकरें; यह सभी याहवे के लिए
होमबलि था। 36 तब उन लोगों ने राजा के
आदेश महानद के इस पार के अधिकारियों
और गर्वनरों को दी। उन सभी ने इस्राएलियों
और परमेश्वर के भवन के काम में मदद की।

9 इन सभी कामों के हो जाने के बाद
गर्वनर मेरे पास आकर कहने लगे, न तो
इस्राएली लोग, न पुरोहित, न लेवीय इस ओर
के देशों के लोगों से अलग हुए वरन उनके
से, अर्थात कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों,
यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों
और एमोरियों के से घिनौने काम करते हैं।
2 क्योंकि उन्होंने उनकी बेटियों में से अपने
और अपने बेटों के लिए पत्नियाँ कर ली
हैं; और पवित्र वंश इस ओर के देशों के
लोगों में मिल गया है। वरन हाकिम और
सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं। 3 यह
बात सुनकर मैंने अपने कपड़े और पगड़ी
को फाड़ दिया और सिर दाढ़ी के बाल नोचे
और आश्चर्य से भरा बैठा रहा। 4 तब जितने
लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर
गुलामी से आए हुए लोगों के धोखे के कारण
थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए और मैं
शाम की भेंट के समय तक विस्मित होकर
बैठा रहा। 5 लेकिन शाम की कुर्बानी के
समय मैं कपड़े और पगडी फाड़े हुए उपवास
की हालत में उठा; फिर घुटनों के बल झुक
गया और अपने हाथ अपने परमेश्वर याहवे
की ओर फैलाकर कहा, 6 हे मेरे परमेश्वर,
मुझे आपकी ओर चेहरा उठाते हुए शर्म आती
है और हे मेरे परमेश्वर, मेरा मुँह काला है,
क्योंकि हमारे अनुचित काम हमारे सिर पर
बढ़ चुके हैं, और हमारा जुर्म बढ़ते-बढ़ते
आकाश तक पहुँचा है। 7 अपने पुरखाओं के
दिनों से लेकर आज तक हम अपराधी हैं और
अपने नाज़ायज कामों की वजह से अपने
राजा और पुरोहित साथ देश-देश के राजाओं

के आधीन हुए। तलवार, गुलामी, लूटे जाने और मुँह काला होने की मुसीबतों में पड़े जैसी कि हमारी हालात आज है। 8 अब कुछ ही दिनों से हमारे परमेश्वर याहवे का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से उनके पवित्र स्थान में एक खूंटी मिले और हमारे परमेश्वर हमारी आँखों में रोशनी आने दें, और गुलामी में हम को सुकून मिले। 9 हम दास तो हैं हीं, लेकिन हमारी गुलामी में हमारे परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया, वरन फारस के राजाओं को हम पर ऐसे कृपालु किया, कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खंडहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली। 10 और अब हे हमारे परमेश्वर इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हमने आपकी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है। 11 जो आपने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दी, कि जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने वाले हो, वह देश देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उनके घिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है, उन्होंने उसे एक सीमा से दूसरी सीमा तक अपनी अशुद्धता से भर दिया है। 12 इसलिए अब तुम न तो अपनी बेटियों की शादी उनके बेटों से कराना और न कभी उनका हालचाल पूछना। इसलिए कि तुम ताकतवर बनो और उस देश को अच्छी-अच्छी वस्तुएँ खाओ और उसे ऐसा छोड़ जाना, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार में हमेशा रहे। 13 और उसे सब के बाद जो हमारे गलत कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जब कि हमारे परमेश्वर आपने हमारे बुरे कामों के बराबर हमें सज़ा नहीं दी, लेकिन बहुतों को बचा कर रखा है। 14 क्या हम आपकी आज्ञाओं को फिर से न मानकर इन घिनौने काम करने वाले लोगों से समधियाना का रिश्ता करें? क्या आप हम पर यहाँ तक क्रोध न करेंगे जिससे हम मिट जाएँ और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए? 15 हे इस्राएल के परमेश्वर याहवे, आप सच्चे हैं। हम बचकर आज़ाद हुए हैं, जैसे कि आज के समय में है। देखिए, हम आपके सामने बेगुनाह नहीं हैं, इसलिए कोई आपके सामने कोई खड़ा रह नहीं सकता।

10 जब एज्रा परमेश्वर के भवन के साम्हने पड़ा, रोता हुआ प्रार्थना और अपराध का अंगीकार कर रहा था, तब इस्राएल में से पुरुषों, महिलाओं और लड़केबालों की एक बहुत बड़ी मण्डली उसके पास इकट्ठी हुई और लोग फूट-फूटकर रो रहे थे। 2 तब यहीएल का बेटा शकन्याह जो एलाम के वंश में का था, एज्रा से बोला, "हम लोगों ने इस देश के लोगों में से गैरयहूदीं लड़कियों से विवाह कर परमेश्वर के साथ दगाबाज़ी की। लेकिन इसके बावजूद इस्राएल के लिए आशा है। 3 अब हम अपने परमेश्वर से यह वायदा करें कि अपने प्रभु की सलाह और अपने परमेश्वर का आदेश सुनकर थरथरानेवालों की सलाह के अनुसार ऐसी सभी महिलाओं को और उनके बालबच्चों को दूर करें और प्रभु के वचन के मुताबिक सब किया जाए। 4 तुम उठो, क्योंकि यह काम तुम्हारा है और हम साथ हैं; इसलिए हिम्मत बान्धों और काम में लग जाओ। 5 तब एज्रा ने उठकर, पुरोहितों, लेवियों और सभी इस्राएलियों के मुखिया लोगों से यह प्रण करवाया कि वे प्रभु के कहने के अनुसार जिएँगे। ऐसा उन्होंने किया भी। 6 तब एज्रा परमेश्वर के भवन के सामने से उठा और एल्याशीब के बेटे योहानाम की कोठरी में गया और वहाँ पहुँचकर न तो खाना खाया, न पानी पिया,

क्योंकि वह गुलामी में से निकलकर आए
हुओं की दग़ाबाजी के कारण दुख मनाता
रहा। 7 तब उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में
रहनेवाले गुलामी से आए हुए सभी लोगों में
यह ऐलान करवाया कि वे यरूशलेम में एक
जगह आएँ। 8 और जो कोई गर्वनर और
बुजुर्गों की सलाह न मानेगा और तीन दिन
के अन्दर न आए तो उसकी सारी दौलत
बर्बाद की जाएगी और वह आप गुलामी से
आए हुओं की सभा से अलग किया जाएगा।
9 तब यहूदा और बिन्यामीन के सभी आदमी
तीन दिन के अन्दर यरूशलेम में इकट्ठे हुए;
यह नौवें महीने के बीसवें दिन में हुआ; और
सभी लोग परमेश्वर के भवन के चौराहे में
उस विषय के कारण और झड़ी के मारे
कँपते हुए बैठे रहे। 10 तब एज्रा पुराहित
खड़े होकर उनसे कहने लगा, तुम लोगों
ने विश्वासघात करके गैरयहूदी लड़कियाँ
ब्याह लीं। इसलिए इस्राएल का गुनाह बढ़
गया है। 11 सो अब अपने बुजुर्गों के परमेश्वर
याहवे के सामने अपना गुनाह मान लो, और
उसकी इच्छा पूरी करो, और इस देश के
लोगों से और गैरयहूदी महिलाओं से दूर हो
जाओ। 12 तब पूरी मण्डली के लोगों ने ऊँचे
शब्द से कहा, जैसा आपने कहा, वैसा ही
हमें करना जायज़ है। 13 लेकिन लोग बहुत
हैं, और झड़ी का वक्त है, और हम बाहर
खड़े नहीं रह पाएँगे और यह एक दिन का
काम नहीं है, क्योंकि हमने इस बात में एक
बड़ा गुनाह किया है। 14 पूरी मण्डली हमारे
गर्वनर ठहराए और जब तक हमारे परमेश्वर
का भड़का हुआ गुस्सा हमसे दूर न हो,
और यह काम समाप्त हो जाए, तब तक
हमारे नगरों के जितने निवासियों ने गैरयहूदी
लड़कियों से विवाह कर लिया, वे ठहराए
हुए समय पर आया करें और उनके संग
एक नगर के पुरनिए और जज लोग आए।
15 इसके खिलाफ़ केवल असाहेल के बेटे
योनातान और तिकवा के बेटे यहजयाह
खड़े हुए, और मशुल्लाम और शब्बतै लेवियों
ने उनकी मदद की। 16 लेकिन गुलामी से
आए हुए लोगों ने वैसा ही किया। तब
एज्रा पुरोहित और पितरों के घरानों के
कितने मुख्य पुरुष अपने-अपने सब नाम
लिखवाकर अलग किए गए। दसवें महीने
के पहले दिन को इस बात की पूछताछ के
लिए बैठे। 17 पहले महीने के पहले दिन
तक उन्होंने उन सभी आदमियों की बात
निपटा दी जिन्होंने गैरयहूदी लड़कियों से
विवाह किया था। 18 और पुरोहितों की
सन्तान में से ये थे, जिन्होंने अन्य जाति
लड़कियों से विवाह किया था अर्थात येशू
के बेटे योसादाक के बेटे, और उसके
भाई मासेयाह, एलीआज़र, यारीब और
गदल्याह 19 इन्होंने ज़ोर-शोर से कहा था,
कि हम अपनी महिलाओं को निकाल देंगे;
और उन्होंने दोषी ठहरकर, अपने-अपने
दोष के कारण एक मेंढ़ा कुर्बान किया।
20 और इम्मेर की औलाद में से, हनानी और
जबद्याह, 21 और हारीम की सन्तान में से,
मासेयाह, एलीयाह, शमायाह, यहीएल और
उज्जियाह। 22 और पशहूर की सन्तान में
से एल्योएनै, मासेयाह, इश्माएल, नतनेल,
योजाबाद और एलासा। 23 फिर लेवियों
में से; योजाबाद, शिमी, केलायाह जो
कलीता कहलाता है, पतह्याह, यहूदा और
एलीआज़र। 24 और गवैयों में से; एल्याशीब
और द्वारपालों में से शल्लूम, तेलेम और
ऊरी। 25 और इस्त्राएल में से; परोश की
सन्तान में रम्याह, यिज्जियाह, मल्कियाह,
मिर्यामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और
बनायाह। 26 और एलाम की सन्तान में से;

मत्तन्याह, जकर्याह, यहीएल अब्दी, यरेमोत और एलियाह। 27 और जत्तू की सन्तान में से; एल्योएनै, एल्याशीब, मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीजा। 28 और बेबै की सन्तान में से; यहोहानान, हनन्याह, जब्बै और अतलै। 29 और बानी की सन्तान में से; मशुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत। 30 और पहतमोआब की सन्तान में से; अदना, कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई और मनश्शे। 31 और हारीम की सन्तान में से; एलीआज़र, यिश्शियाह, मल्किय्याह, शमायाह, शिमोन; 32 बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह। 33 और हाशूम की सन्तान में से; मत्तनै, मत्तत्ता, जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी। 34 और बानी की सन्तान में से, मादै, अम्रान, ऊएल; 35 बनायाह, बेदयाह, कलूही; 36 बन्याह, मरेमोत, एल्याशीब; 37 मत्तन्याह, मत्तनै, यासू; 38 बानी, बिन्नूई, शिमी; 39 शेलेम्याह, नातान, अदायाह; 40 मन्कदबै, शाशै, शारै; 41 अजरेल, शेलेमाह, शेमर्याह, 42 शल्लूम, अमर्याह और योसेफ। 43 और नबो की सन्तान में से; यीएल, मत्तित्याह, जाबाद, जबीना, यद्दो, योएल और बनायाह। 44 इन सभी ने अन्यजाति महिलाएँ ब्याह ली थीं। उनमें से तमाम लोगों की पतियों से लड़के भी पैदा हुए थे।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com